माई री, सहज जोरी प्रकट भई, जु रंग की गौर-स्याम घन-दामिनी जैसें।
प्रथम हू हुती, अब हू, आगें हू रहि है न टरि है तैसें॥
अंग अंग की उजराई सुघराई चतुराई सुंदरता ऐसें।
श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सम बैस वैसें॥

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.केन्द्र) एक ऐसी स्वायत्तशासी संस्था के रूप में संकल्पित है, जिसमें कला के समग्र रूपों का अध्ययन, उनकी अक्षुण्ण समग्रता को विद्यमान रते हुये, पारस्परिक अन्त:निर्भरता तथा अन्त:सम्बन्धों के आयामों के अनुरूप, समायोजित किया जाता है। केन्द्र में विभिन्न कलाओं के व्यापक अध्ययनगत दृष्टिकोणों को समाहित किया गया है, जिनमें वे व्यापक रूप में अन्तर्निहित हैं, यथा - लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला तथा लोकचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, जैसी दृश्य कलायें, चित्रांकन एवं फिल्म, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाटक जैसे प्रदर्शनात्मक कलाओं, मेलों, उत्सवों एवं जीवनशैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता है। केन्द्र का उद्देश्य भारत तथा पड़ोसी देशों में कला से सम्बन्धित क्षेत्र, विशिष्टरूप में दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के समरूप विचारधारा के समुदायों के मध्य अध्ययन, वार्ता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को पुनर्जीवित करना है। केन्द्र के कला-विषयक अध्ययन की विशेषता इस बात से प्रदर्शित होती है कि यह लोक एवं शास्त्रीय, मौखिक-श्रुत, लिखित-उच्चरित तथा प्राचीन एवं आधुनिक कलाओं को किसी भी रूप में विभाजित नहीं करता है। यहाँ इन विभिन्न क्षेत्रों के मध्य सम्वाद तथा संयोजन पर बल दिया जाता है, जो अन्तत: मनुष्य को मनुष्य से तथा मनुष्य को प्रकृति से सम्बद्ध करते हैं।

कलाकोश विभाग, मौलिक अनुसन्धान तथा बहुस्तरीय, बहु-विषयी आयामों तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों की बौद्धिक परम्परा विषय अनुसन्धान करता है। अनुसन्धान एवं प्रकाशन विभाग के रूप में यह कला के मूलभूत सिद्धान्तों को सांस्कृतिक प्रणाली के प्रारूप में तथा मौखिक एवं लिखित, दृश्य एवं श्रुत तथा शास्त्र एवं प्रयोगों के रूप में समायोजित करता है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वेबसाईट : www.ignca.nic.in
सोशल-मीडिया सम्पर्क - फेसबुक : www.facebook.com/IGNCA ट्विटर : @ignca
ईमेल् - kalakosa.hod@gmail.com दूरभाष - 011-2338 8438

MINISTRY OF CULTURE · GOVERNMENT OF INDIA · संस्कृति मंत्रालय · भारत सरकार

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

रसोपासना

स्वामी श्री हरिदास विरचित 'केलिमाल' के पदों पर
विरचित (प्रथम खण्ड) तथा 'केलिमाल-मीमांसा' (द्वितीय खण्ड)
''रसदेश'' पर आधारित

ग्रन्थ-परिचर्चा

सोमवार 07 जनवरी 2019 प्रात: 11:00 बजे

रसदेश

सौन्दर्यशास्त्र का वह अध्याय, जहाँ कला साधना से साध्य बन जाती है, जहाँ कला और कलाकार एकरूप और एकरस हो जाते हैं। यह रसदेश निरतिशय सौन्दर्य का देश है, जिस सौन्दर्य की छाया से सुन्दरतायें जन्म लेती हैं। सौन्दर्य की विराटता, अनन्तता, सम्पूर्णता और अनिर्वचनीयता। यह रसदेश भारत के ऐसे महान् संगीतज्ञ की चेतना-भूमि है, जिन्हें सम्राट् तानसेन का गुरु माना जाता है, जिन्हें गानकला गन्धर्व कहा गया था - स्वामी हरिदास। वृन्दावन की निकुञ्जों में निवास करते हुये स्वामी हरिदासजी अपनी धुन में ध्रुपद रचना करते एवं उनका गायन करते थे। ये संगीत रचनायें उनकी शिष्य परम्परा में आगे चलकर केलिमाल और सिद्धान्त के पद के रूप में सामने आईं। केलिमाल को वृन्दावन के रसिकों ने अपनी गुह्यनिधि के रूप में सँजोकर रखा। केलिमाल में संगीत के सिद्धान्त भी छिपे हुये हैं (प्रथम खण्ड)।

राग ही में रंग रह्यौ, रंग के समुद्र में ए दोउ झागे॥

केलिमाल-मीमांसा, गानकला गन्धर्व की चेतना भूमि, राग और रस के अभिन्न-सम्बन्ध की भूमि। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जिस अनुसन्धान-पद्धति का विकास किया है, उसमें कला का अध्ययन जीवन की समग्रता में होता है। जीवन कहीं से भी विच्छिन्न नहीं है। एक तरह से उस सांस्कृतिक-परिवेश के सूत्रों का अध्ययन, सांस्कृतिक-तथ्यों का अध्ययन, जो व्यष्टि-जीवन और समष्टि जीवन के निरन्तर-प्रवाह में बहते रहे हैं। इस उपासना तत्त्व का स्रोत इस निरन्तर-प्रवाह से विच्छिन्न कैसे हो सकता है? इस अविच्छिन्नता के अध्ययन में ही अनुसन्धानकर्ता ने विचार किया है कि क्या कैवल्य, निर्वाण, मुक्ति, महासुख, आनन्द और रस की अवधारणओं के बीच कोई निरन्तरता है? (द्वितीय खण्ड)।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

ग्रन्थ-परिचर्चा में

आपको सादर आमन्त्रित करता है।

रसदेश

स्वामी श्री हरिदास विरचित केलिमाल तथा 'केलिमाल-मीमांसा'
केलिमाल के पदों पर अनुसन्धान-समीक्षात्मक टिप्पणियाँ

ग्रन्थ-परिचर्चा विद्वत्मण्डल

डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी
ग्रन्थ सम्पादक तथा अनुवादक
लोकगीत-मर्मज्ञ एवं
प्रसिद्ध ब्रजभाषा साहित्यकार, हरियाणा

प्रो. शैलेन्द्र गोस्वामी
संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

सोमवार 07 जनवरी 2019
प्रातः 11:00 बजे

स्थान
लेखक मंच, हॉल नं 12, विश्व-पुस्तक मेला
प्रगति मैदान, नई दिल्ली